आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2582 • उदयपुर, बुधवार 19 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

पटना (बिहार), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 व 3 जनवरी 2022 को भारत विकास विकलांग एवं संजय आनंद फाउण्डेशन अन्तर्राज्यीय बस स्टैण्ड के पास पटना में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता भारत विकास विकालांग न्याय एवं संजय आनंद फाउण्डेशन रहा। शिविर में 446 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 187, केलीपर माप 07 व 38 का ऑपरेशन हेतु चयन हुआ।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री नंदकिशोर जी यादव (विधायक महोदय, पटना), अध्यक्षता श्री डॉ.एस.एस. झॉ (पूर्व निःशक्ता आयुक्त), विशिष्ट अतिथि डॉ शिवाजी कुमार जी, डॉ. विमल जी जैन (महामंत्री भारत विकास परिषद), डॉ. अंकित कुमार सिन्हा निर्देशन में केलीपर्स माप टीम श्री पंकज जी (पीएनडी), श्री नरेश जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री मनीष जी हिण्डोनीया (सहायक), श्री प्रवीण जी (विडियोग्राफर), श्री कपील जी व्यास (सहायक), श्री संदीप जी भटनागर ने भी सेवायें दी।

कल्याण (महाराष्ट्र), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

नारायण सेवा संस्थान आप सभी की शुभकामनाओं व सहयोग से विश्वभर में दिव्यांग सहायता व सेवा के लिये जानी जा रही है। देश–विदेश में समय समय पर शिविर लगाकर कृत्रिम अंगों का वितरण दिव्यांग सहायक उपकरण एवं दिव्यांग ऑपरेशन जारी है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 2 जनवरी 2022 को सेंट लॉरेन्स स्कूल उपाजीधाम के सामने कल्याण में संपन्न हुआ।

शिविर सहयोगकर्त्ता नव अंकुर बहुउद्देशीय सेवाभावी संस्था आयोजन समिति रहा। शिविर में 112 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 28, कैलीपर माप 07, ऑपरेशन चयन हेतु 14 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री विश्वनाथ आत्माराम जी भोईर (विधायक महोदय), अध्यक्षता श्री श्री प्रभुनाथ जी आत्माराम (नगर सेवक), विशिष्ट अतिथि श्री जयवंत जी दादा (नगर सेवक),सौ. वैशाली जी विश्वनाथ भोईर (नगर सेविका), श्री भारत सूर्यभाण जी राठौड़ (अध्यक्ष), श्री प्रकाश जी बाबू बुगडे (कोषाध्यक्ष), श्री विनोद जी राठौड़ (शाखा संयोजक नादेड़), डॉ विजय कार्तीक (ऑर्थोपेडिक सर्जन) कैलीपर्स माप टीम श्री अमित कुमार जी (पीएनडी), श्री किशन जी (टेक्नीशियन), शिविर टीम श्री हरिप्रसाद जी (शिविर प्रभारी), श्री बजरंग जी, श्री गोपाल जी (सहायक), श्री मुकेश जी सेन (आश्रम साधक) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 10.00 बजे से

श्री लोकमान्य तिलक कम्यूनिटी हॉल,
तिलक नगर, इन्दौर, मध्यप्रदेश

अग्रवाल भवन, महाराजा अग्रसेन भवन,
गांधी रोड, रेलवे स्टेशन रोड, देहरादून

सैनी धर्मशाला, सर्या मोहल्ला,
जाजर रोड, रोहतक, हरियाणा

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमन्त्रित है।

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
रविवार 23 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

फ्लोरेंस फिजियोथैरेपी एवं
वैलनेस क्लिनिक बदलापुर पड़ाव
जोनपुर, उ.प्र.

रुपाली डेवलपर्स प्रा. लि.
काली चौरा, रैदापुर,
आजमगढ़, उ.प्र.

चैन्नई, तमिलनाडु

कल्याण मण्डप, मेन रोड,
सिमलीगुडा, उड़ीसा

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमन्त्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

प्रसन्नता प्रेम का झरना : कैलाश मानव

लक्ष्मण ने सोचा मन में जाने देगी ये वन में। ये वन में जाने देगी क्या माता जो इतना प्रेम दे रही है, और लक्ष्मण जी मन ही मन में सोच रहे हैं। प्रभु इनको भी छोड़ेंगे तो किस धन को जोड़ेंगे, कौन सा धन चाहिए ? महाराज सिकन्दर जब एक योगी के पास खड़े हुए। बोले मांग लो, मैं सिकन्दर हूँ। विश्व विजेता सिकन्दर आया हूँ। तो योगी ने कहा– भैया सिकन्दर जी इधर आ जाइये धूप आ रही है इसको आने दीजिए मैं खुश हूँ। मैं प्रसन्न हूँ, मैं आनन्दित हूँ। तो किस धन को जोड़ेंगे अरबपति कलम कान में टंगी रह गई, पड़े रह जाते हैं। कल की पेषी पड़ी रही इधर कटा वारन्ट मौत का। ये हमेशा होता आया है। और आज भी है, आज भी साइलेन्ट अटेक से सात हजार महानुभाव भारत में एक दिन में साईलेन्ट अटेक से मृत्यु के ग्रास हो जाते है, ये तो हनुमान जी की . पा है जो सत्संग करने का अवसर मिल रहा है।

ये हनुमान जी महाराज कथा में .पा कर रहे हैं इसलिए कृपा हो पा रही है महाराज! ये कथा जो व्याकुलता मिटाती है। मन्थरा जैसी व्याकुल कौन हुई होगी। कैकयी कितनी व्याकुल हुई होगी। किसी को भी क्रोध आता है, तो सबसे पहले तो अपना ही अहित करता है।

कौशल्या जी तो बहुत स्तम्भित रह गयी। लक्ष्मण ने सोचा मन में, जाने देगी ये वन में, प्रभु इनको भी छोड़ेंगे तो किस वन को जोड़ेंगे।

कि मंझली माँ तू मरी ना क्यों,
आग से डरी ना क्यों।
लक्ष्मण ने निस्वास लिया,
मान के ज्ञान श्वास लिया।।

शुक्रिया के शब्द नहीं है

उसे जिद्द थी दुनिया बदलने की। पर वो नहीं बदल पाया। उसने हार नहीं मानी और खुद की दुनिया बदल दी। चेहरे पे अपनी स्थित तेज लिये हुए ये है तेजाराम। वे कहते हैं –मेरा नाम तेजाराम है, ग्राम बडाईली है, जिला नागौर, राजस्थान। मैं बचपन से पोलियो ग्रसित था। खेलने – कूदने के लायक भी नहीं था। और उसके अलावा में मम्मी– पापा पे बोझ बनकर रहता था। मैं चल फिर नही पाता था। पांव बिल्कुल मुड़ा हुआ था। दोस्त और पड़ोसी सब ताने मारते थे। बेसहारा है ये कुछ भी मतलब नहीं है मर जाये तो ठीक है।

पोलियो ने इनसे बहुत कुछ छीना। मगर मिली तो लोगों की उपेक्षा या दुत्कार। और उसकी जिन्दगी में उजाला आना बाकी था। वो आया नारायण सेवा संस्थान बनकर। नारायण सेवा संस्थान का नागौर का कैम्प लगा था। एड्रेस मालूम चला कैम्प के द्वारा। उदयपुर जा के ऑपरेशन कराया था। तीन जगह पे मैं और मेरे पापा दोनों ही उधर रहे थे छः महीने तक। तो वहीं भी एक पैसा भी नहीं लगा था। नहीं ऑपरेशन का लगा, मैं गरीब घर का हूँ। कहीं पे दूसरे प्राईवेट जगह पे ऑपरेशन नहीं करवा सकता था। अच्छा हुआ अभी चलने लायक हो सका। नारायण सेवा संस्थान ने तेजाराम को इस काबिल बनाया कि वो अपनी मंजिल की तरफ कदम बढ़ा सके। वहां पे इतना अच्छा स्टॉफ था। डॉक्टर सब इतने अच्छे थे और प्रशान्त जी सर दिन में हमको एक बार मिलकर जाते थे।

छः महीने तक मैं वहां पे रूका था। तो भी वहां पर कोई फैमिली वाले या गांव के या दोस्तों की किसी की याद नहीं आई। सिर्फ यही नहीं संस्थान ने उसकी योग्यता को निखारा और मेरे को यहां पर कम्प्युटर की ट्रेनिग दिया गया। बिल्कुल निःशुल्क फिर उसके बाद मेरा भी बीएसएनएल कॉल सेन्टर में मेरी जॉब लग गया। तेजाराम अब बीएसएनएल कॉल सेन्टर में अब अपनी समस्या भूलकर लोगों की समस्याए सुलझाता है। मैं अब अजमेर में रहता हूँ अब बीएसएनएल कॉल सेन्टर में जॉब करता हूँ, बास और स्टॉफ वाले सब खुश हैं मेरे से। अब मैं मेरे परिवार का पालन – पौषण कर रहा हूँ और मेरा परिवार पूरा खुश है। तकलीफें छूट गई और चेहरा मुसकराने लगा। संस्थान का मैं इतना आभारी हूँ नारायण सेवा संस्थान को शुक्रिया कहने के लिए तेजाराम के पास शब्द नहीं है। और उसकी निःशब्द मुसकान बहुत कुछ कहती है। एक नहीं हजार शुक्रिया, बस शुक्रिया।

सम्पादकीय

एक संत कवि की पंक्ति है – 'करत–करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान। यानी अभ्यास के द्वारा कोई भी अपने स्वरूप का परिवर्तन कर सकता है। अपात्र या अयोग्य व्यक्ति भी सुपात्र या सुयोग्य बन सकता है।यों तो हरके व्यक्ति में अनेक अच्छाइयां होती ही है। तथा कमियों की भी कमियाँ नहीं है। प्रश्न यह है कि व्यक्ति अपनी अच्छाई का बखान तो करता रहता है। पर स्वयं की कमी को स्वीकार नहीं कर पाता । यह मानवीय कमजोरी है। जो अपनी कमजोरी या कमी को नहीं देख पाता उसमें सुधार की गुंजाइश क्षीण हो जाती है किसी भी व्यक्ति को स्वयं को सुधारना हो, समाजोपयोगी व मानवोचित बनाना हो तो सर्वप्रथम तो को उसे अपनी कमियों को पहचानना होगा। उसके बाद उन कमियों का विश्लेषण करके उन्हें त्यागने का मन बनाना होगा। फिर प्रारंभ होता है अभ्यास से अच्छाइयों का अंगीकरण। यह कार्य भले दुष्कर है पर अभ्यास से हर फल की प्राप्ति संभव है। अभ्यास वह क्रिया है जो परिमार्जन करती ही है।

कुछ काव्यमय

जो जागा है
वह मंजिल को पायेगा।
जिसने खुद को परखा है
वो देर–सवेर
सफलतापथपर बढ़ जायेगा।
बस भावों में बसाले
बढ़ने की भावना।
खुल जायेंगी सारी संभावना।।

- वरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

धर्म की रेल

महाराज मैंने तो आज से 31 साल पहले 4 कागज लिए थे। कार्बन लगाये थे। सोचा मैं चार भाइयों को अपने मन की बात लिखूंगा एक कागज मेरे पास रह जायेगा, तीन कागज मैं मित्र को भेज दूंगा। सबसे पहले लिखा था "अपनों से अपनी बात" पराया कोई है नहीं बाबू। आपने कल सुना। इन्सान जी अपने पौत्र के अपहरण का दुःख भूल गए। कल आपने देखा वो घायलों को बचाने के लिए रक्तदान कर रहे हैं। कहीं प्राणदान कर रहें है।

कहीं आशीर्वाद का दान कर रहे हैं। कोई औषधि का दान कर रहे हैं, पर कुछ ऐसे अभागे लोग भी इस दुनियाँ में हैं, जो नहीं समझते धर्म को। नहीं समझते ईश्वर क्या होता हैं? नहीं समझते कर्म फल को? किसी ने पूछा

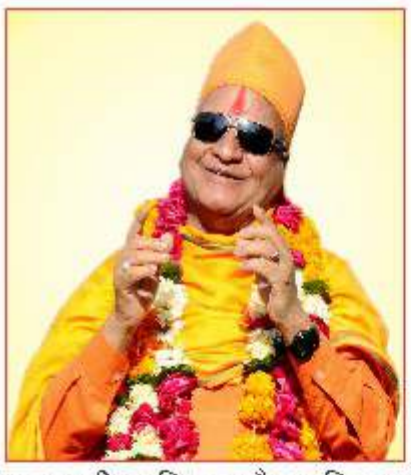

था बाबूजी आस्तिक और नास्तिक में पहचान क्या हैं? हे प्रभो! कहा गया "जो कर्म फल को नहीं मानता वो सबसे बड़ा नास्तिक" है। जो भगवान को नहीं मानता वो सबसे बड़ा नास्तिक है। और जो ये नहीं मानता कि कमी ना कमी मौत आयेगी वो सबसे बड़ा नास्तिक है। इसलिए कहा दो बात को याद रख, जो चाहे कल्याण, इक भगवान को और दूसरे मौत को। भगवान को याद रखना

परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।
सेठ की कलम
कान पर टंगी रहेगी।
और कल की पेशी भी
पड़ी रहेगी।

आपका हमारा वारंट कट कर आ जावे। उसके पहले आओ, आज को सफल करलें। वर्तमान को जिन्दाबाद कर दें।

आनन्द की लहरें फैला दें क्योंकि ये 10 गुणों की रेल चल रही है। ये धर्म की रेल चल रही है। धर्म के 10 लक्षणों की रेल चल रही है। आओ धर्म की रेल में बैठें, व्यवहार की रेल में बैठें।

–कैलाश 'मानव'

आज्ञा मानने से लाभ

जीवन में कितने ही धन व ऐश्वर्य की संपन्नता हो, लेकिन यदि मन में शांति नहीं है तो वह व्यक्ति कभी सुखी नहीं रह सकता। जिसके पास धन और भौतिक सुविधाओं की कमी है, पर उसका मन यदि शांत है तो वह व्यक्ति वास्तव में परम सुखी है। वह हमेशा मानसिक असंतुलन से दूर रहेगा। सुख का अंत दुख से होता है और दुख का अंत सुख से होता है, क्योंकि सुख में व्यक्ति अकर्मण्य हो जाता है और दुख में अपने कर्तव्य का ध्यान रखते हुए आचरण करता है। संस्कारी व्यक्ति ही समाज और राष्ट्र का निधि है। ज्ञानार्जन और धनार्जन यदि परमार्थ के लिए किया जाए, तो वही ज्ञान और धन सार्थक है। सिर्फ अपने उपयोग के लिए अर्जित धन और ज्ञान दोनों का कोई महत्व नहीं।

माता– पिता को चाहिए कि बच्चों को अच्छे संस्कार दें, ताकि वे

अच्छे नागरिक बनकर देश और समाज की प्रगति में भागीदार बनें । मनुष्य को कम बोलना और मीठा बोलना आ जाए तो जीवन ही सार्थक हो जाए। मनुष्य पारिवारिक एवं कर्मक्षेत्र की वेदनाओं से घबराकर जीवन को व्यर्थ समझने लगता है। जबकि मनुष्य जीवन तो देव दुर्लभ है। इसे सार्थक बनाने के लिए आत्म मंथन करते हुए भगवान की भक्ति में समय लगाना चाहिए।

– सेवक प्रशान्त भैया

सूर्य चलने लगा अकेला

नरेश साहू के घर 8 साल पहले दूसरे बेटे ने जन्म लिया। परिवार को खुशी के साथ साथ दुःख भी हुआ। नवजात बालक का दांया पैर बांए पैर की अपेक्षा लगभग 7 इंच छोटा होने के साथ ही घुटने में किसी प्रकार का जोड़ नहीं था। यह स्थिति आगे जाकर इसके लिए बड़ी मुश्किल बनने वाली थी। दुर्ग (छत्तीसगढ़) जिले की पथरिया तहसील के भेड़ेसरा गांव में रहने वाले गरीब किसान नरेश साहू ने अपने इस बेटे को 2–3 साल की उम्र होने पर रामपुर के एम्स सहित अन्य शहरों के अस्पतालों में दिखाया लेकिन कोई स्थाई उपाय नहीं मिला।

सूर्यकांत नामक इस बच्चे को पड़ोस के ही एक स्कूल में दाखिल करवाया गया। बच्चा पांव छोटे–बड़े होने के कारण चल नहीं पाता था। उसे गोद में अथवा साइकिल पर स्कूल छोड़ना पड़ता था। किसी ने कैलिपर तो किसी ने कृत्रिम पांव लगवाने की सलाह दी लेकिन गरीबी के चलते यह व्यवस्था नहीं हो सकी। तभी परिवार के किसी मित्र ने उन्हें उदयपुर के नारायण सेवा संस्थान ले जाने की यह कहते हुए सलाह दी कि वहां निःशुल्क कृत्रिम पांव, कैलिपर अथवा उपचार जो भी सम्भव होगा वह संतोषजनक ढंग से हो जाएगा।

पिता नरेश साहू बच्चे को लेकर 19 सितम्बर को संस्थान में आए जहां डॉ. अंकित चौहान ने उसके पांव की स्थिति को देखते हुए इसका विकल्प विशेष कैलिपर को ही मानते हुए बच्चे को कैलिपर विभाग के हेड डॉ. मानस रंजन साहू के पास भेजा। जिन्होंने सूर्यकांत के लिए अत्याधुनिक मॉड्यूलर एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस सहित विशेष डिजाइन का कैलिपर तैयार कर लगाया। जो बाएं पैर के बराबर ही था। बच्चे की उम्र बढ़ने के साथ उसके वजन को झेलने और उसे चलने में यह एक्सटेंशन प्रोस्थेसिस बड़ी मदद करेगा। कुछ दिन सहारे के साथ चलने के बाद नरेश अब खुद चलता है। पिता ने बताया कि वह अकेला ही स्कूल जाता और लौटता है। संस्थान ने उनके परिवार की चिंता को तो दूर किया ही बालक को भी आत्मविश्वास से भर दिया।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

जयपुर के एक जैन परिवार ने संस्था को एक लाख रुपये दान दिये थे। यह परिवार वर्तमान में बैंकोक शहर में रहता था। इनके 15 साल बाद पहली संतान हुई तो समारोह का अयोजन किया, कैलाश को भी बुलाया। इसी बहाने उसका थाईलेण्ड घूमना हो गया। वहां हिन्दू संस्कृति का प्रभाव तथा उत्कृष्ट बौद्ध मंदिरों तथा गौतम बुद्ध की विशाल प्रतिमाएं देख कैलाश भाव विभोर हो गया। एक बौद्ध मठ में उसने आधा आधा किलो वजनी मणियों की माला देखी। माला बहुत लम्बी थी जो पैरों तक जाती थी। इसका वजन ही 20–25 किलो से कम नहीं होगा। वह इस माला को देखकर चकित रह गया।

भारत लौटा तो दक्षिण भारत में किसी संस्था द्वारा आयोजित एक शिविर में भाग लेने गया। कैलाश ने अत्यन्त लगन से शिविर में काम किया, रात भर रोगियों को भर्ती करने में लगा रहा, अगले दिन ऑपरेशन होने वाले थे। कैलाश को संस्था के बारे में जानकारी नहीं थी। उसे आग्रहपूर्वक बुलाया गया तो वे चला गया।

अगले दिन ऑपरेशन हो रहे थे तो उसने सोचा भोजन व्यवस्था में कुछ हाथ बंटा देता हूं, वह भोजनशाला में गया मगर वहां किसी भी तरह की गतिविधि नहीं देख कर हैरान रह गया। उसने किसी से पूछ लिया– शिविर में इतने लोग भर्ती हुए हैं, उनके लिये भोजन कहां है तो किसी ने बताया कि एक दिन पूर्व की पूड़िया व भोजन सामग्री पड़ी हुई है, वही खिला देंगे। कैलाश को यह सुन कर बहुत बुरा लगा, वह आयोजकों से मिला तो उन्होंने बताया कि रोगी तो एक दिन पहले का भोजन खा लेंगे, बाकी सभी आगन्तुकों के लिये ताजा भोजन आ रहा है। कैलाश को यह सहन नहीं हुआ, उसने विरोध किया तो आयोजकों ने कह दिया– आपको बुरा लग रहा है तो आप ही इनके ताजा खाने की व्यवस्था कर लो। कैलाश ने चुनौती स्वीकार कर ली, तुरन्त आटा वगैरह लाया और ताजा खाना बनवा कर रोगियों को भोजन करवाया।

अंग - 212